

मिथ्यात्व को नशाया, निज तत्त्व को प्रकाशा ।
 आपा-पराया-भासा, हो भानु के समानी ॥१॥
 षट् द्रव्य को बताया, स्याद्वाद को जताया ।
 भवफन्द से छुड़ाया, सच्चि जिनेन्द्र वाणी ॥२॥
 रिपु चार मेरे मग में, जंजीर डाले पग में ।
 ठाड़े हैं मोक्ष-मग में, तकरार मोसों ठानी ॥३॥
 दे ज्ञान मुझको माता, इस जग से तोड़ूँ नाता ।
 होवे 'सुदर्शन' साता, नहिं जग में तेरी सानी ॥४॥

(८)

नित पीज्यो धी धारी, जिनवाणी सुधा-सम जानिके ॥टेक॥
 वीर मुखारविंदतैं प्रकटी, जन्म-जरा भयटारी ।
 गौतमादि गुरु-उर घट व्यापी, परम सुरुचि करतारी ॥१॥
 सलिल समान कलिल मल गंजन, बुधमन रंजन हारी ।
 भंजन विभ्रम धूलि प्रभंजन, मिथ्या जलद निवारी ॥२॥
 कल्याणक तरु उपवन धरिनी, तरनी भवजल तारी ।
 बंधविदारन पैनी छैनी, मुक्ति-नसैनी सारी ॥३॥
 स्व-परस्वरूप प्रकाशन को यह, भानुकला अविकारी ।
 मुनिमन कुमुदिनि-मोदन शशिभा, शमसुख सुमन सुवारी ॥४॥
 जाके सेवत बेवत निजपद, नसत अविद्या सारी ।
 तीन लोकपति पूजत जाको, जान त्रिजग-हितकारी ॥५॥
 कोटि जीभ सों महिमा जाकी, कहि न सके पविधारी ॥^१
 'दौल' अल्पमति केम कहै यह, अधम-उधारन हारी ॥६॥

(९)

साँची तो गंगा यह वीतरागवाणी ।
 अविच्छिन्न धारा निजधर्म की कहानी ॥टेक॥